षष्ठोऽध्यायः

जुहोत्यादिगण

"हु" धातु इस गण की पहली धातु है। "लट्" में इस धातु का रूप "जुहोति" बनता है अतः इसे "जुहोत्यादिगण" कहते हैं। 1. धातु से प्रत्यय आने पर अ (शप्) विकरण का लोप (श्लु) हो जाता है और धातु को द्वित्व हो जाता है। जैसे :-

दा + ति = द्वित्व
दा + दा + ति = अभ्यास ह्रस्व (पूर्ण वर्ण को) ददाति

2. अभ्यास के "ध्" वर्ण को "द्", "म्" वर्ण को "ब्" और "ह्" वर्ण को "ज्" हो जाता है।

धातुरूप परस्मैपद

	[दा] = देना			[भी] = डरना		
	(लट्)			(लट्)		
	एक व०	द्विव०	बहु व०	एकव०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति	विभेति	विभीतः	विभ्यति
म० पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ	विभेषि	विभीथः	विभीथ
उ० पु०	ददामि	दद्वः	दद्मः	विभेमि	विभीवः	विभीमः
	(लृट्)			(लृट्)		
प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
म० पु०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यक्ष
उ० पु०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः
	(लोट्)			(लोट्)		
प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
म० पु०	अददाः	अदत्तम्	आदत्त	अबिभेः	अभिभीतम्	अबिभीत
उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म	अभिभियम्	अबिभीव	अबिभीम
	(विधिलङ्ग)			(विधिलङ्ग)		
प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
म० पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात्	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
उ० पु०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

अनुरूप-धातुरूप

धातु	अर्थ	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
धा	धारण करना	दधाति	धस्यति	दधतु	अदधात्	दध्यात्
अभि-धा	कहना	अभिदधाति	अभि धस्यति	अभि दधतु	अभ्यदधात्	अभि दध्यात्
वि = धा-	करना	विदधाति	विधस्यति	विदधतु	व्यदधात्	विदध्यात्
सा	छोड़ना	जहाति	हास्यति	जहातु	अजहात्	जहात्

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. गुरू शिष्य को उपदेश देता है।
2. शेर की आवाज सुनकर सब डरते हैं।
3. अकेली सीता वन में नहीं डरती थी।
4. घोड़े के लिए वह घास बनाता है।
5. उन्होंने वैदिक धर्म धारण किया।
6. हमेशा जीवन में सदवचन ही कहो।
7. अब वह दुर्व्यवहार को छोड़ेगा।
8. पिता ने राम से कहा तुम वन को जाओ।
9. जो लोभ को नहीं छोड़ता वह दुःखी होता है।
10. दयालु सेठ इन दरिद्रों को धन दे दे।